

DPN 6101

Title : लक्ष्मी नृसिंह कवच LAKṢMĪ NR̥SINHA KANACHA

Run. No. 6792

Cat. No. 35

Micro. No.

Subject Hymn

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. /

Size in cms. 16.5 X 8.8

Folios 3

Lines (in a page) 9

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor पशुप्रतिमान प्रःमाय

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place Paśupati mān Pah māy

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

* श्रीगणेशाय नमः ॥ ब्रह्मोवाच ॥ अनेक मंत्रकोटि वै नृसिं - - - - - नाम माचरेत ॥
□ इति श्री नृसिंह पुराणे ब्रह्मा सावीत्री संवादे श्रीलक्ष्मी नृसिंह कवचं संपूर्णं सुममस्तु ॥ ॥



श्रीः

ज्ञान

श्रीगणेशाय नमः ॥ वन्दे वा ॥ अनेक मंत्र कोटि वै नृनि
नाममाचरेत् ॥ १ ॥ ॐ अस्य श्रीनृसिंहो देवता नृवी जंर
शक्तिः ॥ जौ की लंक ॥ श्रीनृसिंह पत्न्यै ॥ सर्व भयवीनाशा
यै ॥ श्रीनृसिंह कवचं जपे विनियोगः ॥ ॐ नमो अंगुष्ठाभ्यां
नमः ॥ ॐ धौ त जौ नीभ्यां नमः ॥ ॐ शै मध्यमाभ्यां नमः ॥ ॐ
वौ अनामीकाभ्यां नमः ॥ ॐ हौ कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ॐ जौ
करतले करपृष्ठाभ्यां नमः ॥ एवं न्यासः ॥ अथ ध्यानं ॥ सत्
ज्ञानं मुखं स्वरूपनिर्भलं ॥ ॐ श्रीही की श्रीनृ नंदी रा
धि मध्ये स्थले योग नूता मतिः ॥ प्रसन्नवदना मुख

श्रीः

नृसिं

रां च सह श्रो ज्वलं ॥ ती नृशो च कारणा काम भय वराननं ॥
विभ्रजमकरकुण्डलं त्रभूतं फण्डिं दुग्धधवलं ॥ श्री ल
क्ष्मी नृसिंहं भजेत् ॥ ॐ नमो प्रौ रौ वौ हौ जौ मम स्यात् ॥ इ
ति मंत्रः ॥ ॐ नमो श्रीनृसिंहाय सर्व रिच्छाय विनासाय ॥
सर्व जन मोहनाय सर्वे राजा वसंकु न ॥ ॐ श्रीनृसिंहा
य ॥ सिंह राजाय नरको स्वरि नमः ॥ कालाय दुष्ट वंधा
नाय उग्राय उग्रवीराय विकटाय वज्रदेहिने स्यात् ॥
रुद्राय रुद्रघोराय भद्राय भद्रकारिणे ॥ ॐ श्रीही की

श्री नृसिंहय नमः स्वाहा ॥ उ नमो नृसिंहय ॥ उ क
 विलजटा य ओमो वृवाचा सत्यं सत्यं ॥ महाउग्रप्रचं
 डायनमो नृपाय ॥ उ ही ही ही ही ही हुं हुं की की की पुं
 पुं फट स्याहा ॥ सर्वे रोगानां वंधः ॥ सर्वे गृहानां वंधः ॥
 सर्वे दैवदुःखानां वंधः ॥ सर्वे व्याधूनां वंधः ॥ सर्वे प
 न्मगानां वंधः ॥ सर्वे वरिचकानां वंधः ॥ सर्वे भूतप्रेत
 पीसाद्यानां वंधः ॥ शंकिनी डांकीनी वंधः ॥
 जंजमंज वंधः ॥ सर्वे भूतानि की लय की लाय मदीराय

श्री ४

नृसिंह चूरीय चूरीय स्याहा ॥ जे जे मदि रोघितां ते ते सर्व
 वंधितां ॥ सर्वे चिंताहरनाय स्याहा ॥ देहदेह पंचपंच
 चूरीय चूरीय स्याहा ॥ गुदा वज्रचक्रैराभ संकु
 उ जीं हीं की श्री नृसिंह ॥ उ जीं हीं जीं हीं नीं नीं
 श्री नृसीं हाय नमः स्वाहा ॥ इति श्री नृसिंह पूरा
 गोवत्सा सावीत्री संम्वदे श्री लक्ष्मी नृसिंह कवचं
 वं पुं सुभमस्तु ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

